

पीड़कनाशी - कितने सुरक्षित ?

डॉ. वाई.पी. गुप्ता

खाद्य पदार्थों

के उत्पादन बढ़ाने, उन्हें

लम्बे समय तक सुरक्षित रखने, ताज़ा

रखने की कोशिश में कई तरह के रसायनों तथा

पीड़कनाशियों का इस्तेमाल का इस्तेमाल किया जाता है। ब्रोमोफॉस,

डी.डी.टी., क्लोरडेन, मैलाथियॉन, पैराथियॉन जैसे पीड़कनाशियों की

लम्बी फेहरिस्त है। ताज़ा अनुसंधान बताते हैं कि इन खाद्य पदार्थों के

ज़रिए पीड़कनाशियों का शरीर में प्रवेश खतरनाक है। एक अध्ययन...

कृ

षि के विकासक्रम में, उत्पादन को पर्याप्त बढ़ाने हेतु फसलों की रक्षा के लिए पीड़कनाशी अब एक महत्वपूर्ण साधन बन गए हैं। फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीट, फफूंद, कृमि इत्यादि को मारने वाली दवाओं के पूरे समूह को कहा पीड़कनाशी (Pesticides) जाता है। भारत में 140 से भी अधिक पीड़कनाशी उपयोग में हैं और उनका इस्तेमाल कुल 90,000 टन प्रति वर्ष के आसपास होता है।

लेकिन पीड़कनाशियों का बिना सोचे विचारे उपयोग, विकासमान संसार में व्यावसायिक जोखिमों के अतिरिक्त, मानव स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर चेतावनी बन गई है। इनके अत्यधिक उपयोग से कैंसर बढ़ने की घटनाएं चिंता प्रकट करती हैं। इन कृषि रसायनों के विषैले होने से, खाद्यों में उनके कुछ अवशेष रह जाते हैं और जब यह मात्रा सुरक्षित स्तर से अधिक हो जाती है तो हानिकारक प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

दिल्ली, बिहार, उत्तर प्रदेश और आन्ध्र प्रदेश जैसे राज्यों से खाद्यों और वनस्पतियों के एकत्र किए गए 75 प्रतिशत नमूनों में पीड़कनाशियों के अवशेषों की पर्याप्त मात्रा पाई गई है। देश के गेहूं उपयोग करने वाले मुख्य क्षेत्रों से गेहूं के आटे की 15 ब्राण्डों के पैक आटे के विश्लेषण से उनमें डी.डी.टी. जैसे पीड़कनाशी पाए गए हैं। कुछ ही समय पहले बी.एच.सी. (पीड़कनाशी) के पानी में पाए जाने से आगरा में 19 मौतें हो चुकी हैं। इसलिए

यह स्थिति गंभीर प्रश्न उत्पन्न करती है कि क्या यह रासायनिक पीड़कनाशी जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखने अथवा बढ़ावा देने हेतु वरदान है अथवा अभिशाप।

कीटनाशकों के लगातार उपयोग से इनके मिट्टी में रिसते रहने से जमीन के अंदर पानी के स्रोतों को भी यह प्रभावित करते हैं। इसके परिणाम स्वरूप नदियां, सरिताएं और तालाब आदि इन हानिकारक रसायनों से प्रदूषित हो गए हैं और पीने के पानी के स्रोतों को प्रभावित कर रहे हैं। कर्नाटक के हसन ज़िले के तालाबों के पीने के पानी में 0.02 से 0.2 पी.पी.एम. (अंश, प्रति दस लाख भाग) पीड़कनाशी पाए गए। कावेरी (कर्नाटक) के पानी में बी.एच.सी. का स्तर 1000 पी.पी.बी. (अंश प्रति सौ करोड़ भाग) और मिथायल पैराथियॉन 1300 पी.पी.बी. से अधिक था। यमुना नदी जो दिल्ली और आगरा शहरों के पीने के पानी का साधन है, में 21.8 पी.पी.एम. डी.डी.टी. की मात्रा सूचित की गई है।

विभिन्न खाद्य वस्तुओं जैसे गेहूं, चावल, मूंगफली, मछली, गोश्त, मक्खन, घी और चीज़ में आजकल पीड़कनाशियों के अवशेष काफी मात्रा में पाए जा रहे हैं। एक औसत भारतीय के शरीर के ऊतकों में डी.डी.टी. के संचयन का स्तर, विश्व में सर्वाधिक 12.8 और 31.0 पी.पी.एम. के बीच में पाया गया है। भारतीयों के भोजन में डी.डी.टी. का प्रवेश शाकाहारी और मांसाहारी लोगों में क्रमशः 238.1 और 224.1 माइक्रोग्राम प्रति

